ज़्यादा छात्रों को शिक्षा, आधुनिक ढंग से

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

कुछ दिनों पूर्व एल.वी. प्रसाद नेत्र संस्थान में हम कुछ लोग एक रोमांचक अनुभव में शरीक हुए थे। अनुभव था जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय के ग्लौकोमा विशेषज्ञ प्रोफेसर हैरी क्विगले का सजीव व्याख्यान। क्विगले एक चिकित्सक-वैज्ञानिक तो हैं ही, उत्तम वक्ता भी हैं।

यह एक विशेष घटना थी क्योंकि एक तो यह सजीव (लाइव) थी और साथ ही अंतर्क्रियात्मक भी थी। वे यू.एस. में बाल्टीमोर में बैठे थे और उनके समयानुसार सुबह 8 बजे हमसे बातचीत कर रहे थे और भारत में हम लोग अपने समयानुसार उनकी बात को शाम साढ़े छः बजे सुन रहे थे। और श्रोताओं में सिर्फ हम हैदराबाद के 170 लोग नहीं थे, बल्कि वाइज़ैग के हमारे जीएमआरवी कैम्पस और भुवनेश्वर में बीईआई कैम्पस के साथी भी थे।

कुल मिलाकर क्विगले ने ग्लोब के आर-पार तीन दूर-दूर के शहरों में बैठे करीब 250 लोगों को यह व्याख्यान दिया था। बीच-बीच में श्रोता स्पष्टीकरण करने या सवाल पूछने के लिए उन्हें रोक देते थे। और 50 मिनट के भाषण के बाद करीब 25 मिनट का सवाल-जवाब सत्र भी हुआ।

व्याख्यान का विषय थोड़ा विशिष्ट थाः ग्लौकोमा नामक नेत्र रोग जिसके वे विशेषज्ञ माने जाते हैं। उन्होंने अपनी बात को चार मुख्य बिंदुओं पर केंद्रित किया था।

चार विचार

एक: मरीज़ के पूरे परिवार पर ध्यान दें। ग्लौकोमा परिवारों में देखा जाता है। लिहाज़ा यदि किसी बुज़ुर्ग व्यक्ति को क्लिनिक में लाया जाए, तो साथ आए परिवार के सदस्यों की भी जांच करें, चाहे उन्हें कोई शिकायत न हो। उनके मामले में रोकथाम के ऐहतियाती कदम उठाए जा सकते हैं। ग्लौकोमा अंधत्व का दूसरा सबसे प्रमुख कारण है और यह खामोशी से धीमे-धीमे दृष्टि का ह्रास करता है।

दो: यह मानकर न चलें कि आंख का दबाव 21 इकाई तक बढ़ेगा ही। यह एक गलत धारणा है। नेत्रांतर्गत दबाव व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर है और कई बातों पर निर्भर करता है। इसलिए कई अन्य बातों की जांच ज़रूरी होती है - 'डिस्क' की साइज़, 'डिस्क-कप अनुपात', कॉर्निया की मोटाई वगैरह।

तीन: यह सुनिश्चित करें कि मरीज़ आपकी सलाह का पालन करे और दवाइयां नियमित रूप से ले। चूंकि ग्लौकोमा के मरीज़ को आंख के ड्रॉप्स या गोलियों का सेवन नियमित रूप से, लंबे समय तक रोज़ाना करना होता है, इसलिए इस बात की संभावना काफी अधिक होती है कि वह इससे ऊबकर या थककर दवा लेना छोड़ देगा/देगी। डॉक्टर को मरीज़ के पीछे पड़ना होगा कि वह नियमित रूप से दवा ले।

चार: नए-नए फैंसी उपकरणों और टेक्नॉलॉजी पर बहुत ज़्यादा निर्भर न रहें। ये चीज़ें एक-दो लक्षणों या कारकों पर ही ध्यान देती हैं। अपने आंतरिक एहसास पर ज़्यादा भरोसा करें। यह आंतरिक एहसास कई मरीज़ों का उपचार करने के अनुभव से हासिल होता है। ऐसा प्रत्येक मरीज़ अपने-आप में अनोखा होता है।

लागत का सवाल

जब मैंने यह पता किया कि इस वीडियो सम्मेलन सुविधा को जमाने में खर्च कितना आया है, तो मुझे आज की कीमतों पर 2 करोड़ रुपए का आंकड़ा मिला। यह सुविधा चार केंद्रों को जोड़ती है। हम सबको अपने स्कूल या कॉलेज के ऐसे शिक्षक याद हैं जो इतने अच्छे थे कि उन्होंने हमारे कैरीयर सम्बंधी फैसले तक बदल दिए थे। जैसे पिलानी में मेरे रसायन शास्त्र के अध्यापक श्री राजा राव थे। उन्होंने विषय को इतना जीवंत व रोमांचक बना दिया था कि आगे चलकर मैंने कैरीयर के लिए रसायन शास्त्र को ही चुना।

यह कितनी अच्छी बात होगी यदि हम उन महान शिक्षकों को याद कर पाएं, उनसे निवेदन कर पाएं कि वे वीडियो सम्मेलन के ज़रिए पढ़ाएं। इसमें बड़ी संख्या में छात्र वार्तालाप करते हुए लाभ उठा सकेंगे।

क्विग्ले की मिसाल

और बात इतनी ही नहीं है। जैसा कि क्विग्ले के उदाहरण से पता चलता है, हर जगह के सर्वोत्तम शिक्षकों को इस शैली से पढ़ाने को कहा जा सकता है। और एक अच्छे शिक्षक को जो बात सबसे ज़्यादा पसंद होती है, वह है पढ़ाना, और ज़्यादा पढ़ाना - सिर्फ निवेदन करने की देर है।

एक अच्छा शिक्षक पढ़ाते समय उतना ही 'प्रेरित' महसूस करता है जितने उसके छात्र करते हैं। और उन्हें हाई स्कूल व स्नातक छात्रों को पढ़ाना अच्छा लगता है। पढ़ाते-पढ़ाते वे समय के साथ बेहतर से बेहतर होते जाते हैं। नोबल विजेता रसायन शास्त्री लाइनस पौलिंग, भौतिक शास्त्री रिचर्ड फाइनमैन और जीव वैज्ञानिक साल्वेडोर लूरिया सदा स्नातक छात्रों को पढ़ाना चाहते थे और अंतिम समय तक पढ़ाते रहे।

हमारे अपने प्रोफेसर सी.एन.आर. राव को भी कॉलेज व हाई स्कूल के छात्रों को पढ़ाने में मज़ा आता था और छात्रों को भी खूब मज़ा आता था।

भारत 8 और आई.आई.टी. तथा 16 और राष्ट्रीय विश्वविद्यालय खोलने जा रहा है। और मौजूदा संस्थानों का विस्तार तो हो ही रहा है। इसके अलावा निजी क्षेत्र में भी संस्थान लगातार खुल रहे हैं। इन सबके सामने एक प्रमुख समस्या शिक्षकों के अभाव की है, खासकर अच्छे व प्रेरणादायी शिक्षकों का तो घोर अभाव है।

समाधान

तो समाधान क्या है? टेक्नॉलॉजी का उपयोग। असाधारण, अनुभवी शिक्षकों की पहचान की जाए, जो सेवा निवृत्त हो चुके हैं क्योंकि उनकी उम्र 58-60-62-65 की हो चुकी है। मगर वे इच्छुक हैं और उपलब्ध हैं। उनसे निवेदन किया जाए कि वे वीडियो सम्मेलन की शैली में अध्यापन करें।

टेक्नॉलॉजी उपलब्ध है, इसकी लागत विभिन्न संस्थान साझा कर सकते हैं और हरेक को इस सुविधा का लाभ मिलेगा। इस तरह से प्रत्येक व्याख्यान को सैकड़ों तो क्या हज़ारों छात्र सुन सकेंगे और वक्ता के साथ उसी समय बातचीत कर सकेंगे, सवाल पूछ सकेंगे, स्पष्टीकरण ले सकेंगे। जैसी कि कहावत है, जहां चाह है, वहां राह है। और इस सवाल के जवाब में कि एक शिक्षक कितने छात्रों को पढ़ा सकता है, मुझे यही कहना है कि टेक्नॉलॉजी सीमाओं को विस्तार देती जाती है।

(स्रोत फीचर्स)

स्रोत सजिल्द

स्रोत के पिछले अंक

एक वर्ष सजिल्द रुपए 200.00। डाक खर्च रुपए 25.00 अतिरिक्त ।